पिता अब्राहम

पाठ दो

अब्राहम का जीवन: वास्तविक अर्थ

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यत: उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु

I. प्रस्तावना 1

II. संबंध 2

क. परिभाषा 3

ख. प्रकार 3

1. पृष्ठभूमियाँ 4
2. नमूने 5
3. पूर्वाभास 6

ग. सार 8

III. निहितार्थ 9

क. मूल प्रभाव 10

ख. प्रमुख विषय 10

1. ईश्वरीय अनुग्रह 11
2. अब्राहम की वफादारी 11
3. अब्राहम के लिए आशीषें 12
4. अब्राहम के माध्यम से आशीषें 13

ग. पाँच चरण 14

1. पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभव 14
2. दूसरे लोगों के साथ शुरुआती संपर्क 15
3. परमेश्वर के साथ वाचा 16
4. दूसरे लोगों के साथ बाद वाले संपर्क 17
5. वंश और मृत्यु 18

IV. निष्कर्ष 20

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

पिता अब्राहम

पाठ दो

अब्राहम का जीवन: वास्तविक अर्थ

प्रस्तावना

यीशु मसीह के वफादार अनुयायी पवित्र शास्त्र से प्रेम करते हैं। हम पाते हैं कि वे कई अलग और बहुत व्यक्तिगत तरीकों से हमारे जीवनों से बातें करते हैं। पवित्र शास्त्र के बारे में यह एक अनमोल सत्य है जिसको मसीहों को कभी भी भूलना नहीं चाहिए। लेकिन कई बार पवित्र शास्त्र का यह अद्भुत व्यक्तिगत आयाम उस बात से जिसे हमें सदा याद रखनी है हमारी नज़र को हटाने का कारण बन सकता है। बाइबल को प्रत्यक्ष रूप से आपके या मेरे लिए नहीं लिखा गया था। सबसे पहले स्थान पर, पवित्र शास्त्र को अन्य लोगों के लिए लिखा गया था जो हजारों वर्ष पहले रहते थे। इसलिए जब हम इस बात को समझने की कोशिश करते हैं कि पवित्र शास्त्र आज हमारे जीवनों में कैसे लागू होता है, तो हमारे आधुनिक अनुप्रयोगों पर पवित्र शास्त्र के वास्तविक अर्थ को आधारित करने में हमें सदैव सावधान रहना चाहिए

यह पाठों की एक श्रृंखला है जिसका शीर्षक हमने *पिता अब्राहम* रखा है। और इन पाठों में हम अब्राहम के जीवन की कहानी की खोज कर रहे हैं जो कि उत्पत्ति 11:10-25:18 में प्रकट होती है।

तीन शुरुआती पाठों का यह दूसरा पाठ है, और हमने इस पाठ का शीर्षक रखा है, "अब्राहम का जीवन: वास्तविक अर्थ।" इस पाठ में हम देखेंगे कि अब्राहम के जीवन की कहानियों को उस परिपेक्ष्य में पढ़ना कितना महत्वपूर्ण है कि वे कब लिखी गई और किन लोगों के लिए वे लिखी गई थी। जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर मूसा के पीछे चल रहे थे तो इन कहानियों का मूल प्रभाव जो इस्राएल देश पर होना था हम उसका पता लगायेंगे।

हम दो प्रमुख विषयों पर देखने के द्वारा उत्पत्ति 11:10-25:18 के मूल अर्थ का पता लगायेंगे। सबसे पहले, हम बात करेंगे कि किस तरह से मूसा अब्राहम के जीवन के इतिहास और अपने वास्तविक श्रोताओं के अनुभवों के बीच संबंध बनाता है। और दूसरा, हम मूल श्रोताओं के लिए इन संबंधों के कुछ निहितार्थों को सारांशित करेंगे।

इससे पहले कि हम अब्राहम के जीवन के वास्तविक अर्थ को देखें, हमने जो पिछले पाठ में देखा था उसकी समीक्षा करने के लिए एक पल के लिए हमें रुकना चाहिए। इस बिंदु तक, हमने दो महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान-केंद्रित किया है। पहला, हमने सुझाव दिया था कि उत्पत्ति 12:1-3 अब्राहम की कहानी में चार प्रमुख विषयों को उजागर करती है। अब्राहम के लिए परमेश्वर करुणा या दया (वे कई तरीके जिनके द्वारा परमेश्वर कुल-पिता को दया दिखाता है), परमेश्वर के प्रति वफादार बनने की अब्राहम की जिम्मेदारी (वे कई तरीके जिनके द्वारा परमेश्वर अब्राहम से अपनी आज्ञा पालन की अपेक्षा करता है), अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषें (महान राष्ट्र, कई वंशज, एक देश, और एक महान नाम की प्रतिज्ञाएं) और अब्राहम के माध्यम से परमेश्वर की आशीषें (यह प्रतिज्ञा कि संसार के सभी कुलों के लिए अब्राहम आशीष ठहरेगा)।

इसके अलावा, हमने यह भी देखा कि ये प्रमुख विषय उस तरीके को आकार देते हैं जिसमें अब्राहम की कहानी को उत्पत्ति में बताया गया है। हमने सीखा था कि अब्राहम की कहानी पाँच समरूप

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

(एक जैसे) चरणों में विभाजित होती है। पहले, 11:10-12:9 में हम अब्राहम की पृष्ठभूमि और शुरुआती अनुभवों के साथ आरंभ करते हैं। दूसरा, 12:10-14:24 में कई घटनाएं अन्य लोगों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के पहले वाले संपर्कों पर ध्यान-केंद्रित करते हैं। अब्राहम के जीवन का तीसरा और बीच वाला भाग उस वाचा पर ध्यान-केंद्रित करता है जिसे परमेश्वर 15:1-17:27 में अब्राहम के साथ बाँधता है। अब्राहम के जीवन का चौथा भाग 18:1-21:34 में अन्य लोगों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के बाद वाले संपर्कों की ओर मुड़ता है। और 22:1-25:18 में पाँचवाँ भाग अब्राहम के वंश एवं उसकी मृत्यु को बताता है।

ये पाँच चरण कुल-पिता के जीवन को समानताओं वाले प्रारूप में दर्शाते हैं। 15:1-17:27 का तीसरा भाग, जिसका नाता अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा से है, अब्राहम के जीवन के केंद्र-बिंदु के रूप में काम करता है। दूसरा और चौथा भाग एक दूसरे के अनुरूप है क्योंकि ये दोनों भाग अन्य लोगों के साथ अब्राहम के संपर्कों पर केंद्रित हैं। पहला और अंतिम भाग एक दूसरे के अनुरूप हैं, अतीत से और भविष्य में अब्राहम के पारिवारिक विरासत को खोजते हुए उसके जीवन के दोनों ओर के छोर को बताते हैं।

कई मायनों में, यह पाठ अब्राहम के जीवन की संरचना और विषय-वस्तु में इन अंतर्दृष्टियों पर आगे की बात करेगा। इस समीक्षा को ध्यान में रखते हुए, इस पाठ की मुख्य बातों पर ध्यान करने के लिए हम तैयार हैं, जो है, उत्पत्ति की पुस्तक में अब्राहम के जीवन का वास्तविक अर्थ। आइये, अब्राहम के बारे में कहानियों और इन कहानियों को सबसे पहले प्राप्त करने वाले उन इस्राएलियों के अनुभवों के बीच मौजूद संबंधों की खोज करते हुए शुरुआत करते हैं।.

संबंध

पाठों की इस श्रृंखला में, हम अब्राहम के जीवन की हमारी व्याख्या को इस पूर्व-धारणा पर बना रहे हैं कि ये कहानियाँ वास्तविक रूप से मूसा के दिनों में लिखी गई थीं, और प्रामाणिक रूप से ये कहानियाँ ठीक वैसी ही हैं जैसे उस समय थीं। ज्यादातर समीक्षात्मक विद्वान मानते हैं कि ये कहानियाँ मूसा के दिनों में नहीं लिखी गई थीं, लेकिन पुराने नियम के दूसरे भाग और साथ में यीशु मसीह भी स्वयं जोर देते हैं कि मूसा ने ही उत्पत्ति को लिखा, और इस कारण से आधुनिक मसीहों को भी इस पुस्तक के लिए मूसा को ही लेखक के रूप में प्रमाणित करना चाहिए। लेकिन इस श्रृंखला में हम एक कदम आगे जाने के लिए भी दिलचस्पी रखते हैं। हम न सिर्फ इस तथ्य को समझना चाहते हैं कि मूसा ने इन कहानियों को लिखा था: हम जानना चाहते हैं कि उसने इन कहानियों को क्यों लिखा। अब्राहम के जीवन पर उसका दृष्टिकोण क्या था? इनको लिखने में उसका उद्देश्य क्या था? अब्राहम के जीवन के वास्तविक अर्थ की खोज को शुरु करने का एक सबसे अच्छा तरीका यह होगा, कि उन तरीकों की खोज की जाये जिनसे मूसा अब्राहम के बारे में अपनी कहानियों का संबंध अपने मूल श्रोताओं के अनुभवों के साथ बनता है, यानी कि इस्राएली लोग जो मिस्र देश से निकलकर प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर उसके पीछे-पीछे जा रहे हैं।

इस बात की खोज करने लिए कि मूसा अब्राहम के बारे में अपनी कहानियों का संबंध अपने वास्तविक श्रोताओं के साथ कैसे बनाता है, हम तीन बातों पर विचार करेंगे: सबसे पहले हम पता लगायेंगे कि जब हम इन संबंधों की बात करते हैं तो उससे हमारा तात्पर्य क्या है; दूसरा हम संबंधों के

कुछ प्रकारों को देखेंगे जो अब्राहम के जीवन की कहानियों के भीतर नज़र आते हैं; और तीसरा, अब्राहम के जीवन की कहानियों की संरचना के प्रत्येक पाँच प्रमुख चरणों को देखने के द्वारा हम इन कहानियों में संबंधों को सारांशित करेंगे। आइये इस बात के साथ शुरु करते हैं कि जब हम संबंधों की बात करते हैं तो उससे हमारा तात्पर्य क्या है।

परिभाषा

कई मायनों में, जब मूसा ने अब्राहम के जीवन का इतिहास लिखा, तो उसने स्वयं को एक ऐसी परिस्थिति में पाया जिसमें बाइबल की कहानियों के सभी लेखक स्वयं को पाते हैं। वह दो संसारों के बीच खड़ा था। एक ओर, मूसा ने उन कहानियों को प्राप्त किया है जिसे हम कहेंगे "प्राचीन संसार:" अब्राहम का संसार। 500 से 600 साल पहले अब्राहम के जीवन में क्या घटित हुआ उसे इसके बारे में परम्पराओं से और परमेश्वर के अलौकिक प्रकटीकरण दोनों से चला पता था। इस मायने में, मूसा ने पहले अब्राहम के जीवन के प्राचीन संसार के साथ कार्य किया।

लेकिन दूसरी ओर, मूसा ने उस संसार के साथ भी कार्य किया जिसमें वह रहता था, जिसे शायद हम "उनका संसार" कह सकते हैं: मूसा और इस्राएलियों का संसार जो उसके पीछे चले हैं। उस समय परमेश्वर के लोगों का अगुवा होने के नाते, मूसा ने अब्राहम के जीवन के प्राचीन संसार के बारे में उनके अपने संसार की जरूरतों को पूरा करने के वास्ते अपनी कहानियों को लिखा।

जब मूसा अब्राहम के "प्राचीन संसार" और "उनके संसार" (अपने समकालीन संसार) के बीच मध्यस्थता करता है, वह कुल-पिता के जीवन और अपने श्रोताओं के जीवनों के बीच संबंधों को बनाता है ताकि वे उन कहानियों की प्रासंगिकता को देख पायें जिनको वह लिख रहा था। कहने का तात्पर्य यह है, मूसा ने अपनी कहानियों को ऐसे तरीकों से चुना व आकार दिया था जिन्होंने उसके पीछे चल रहे इस्राएलियों के लिए यह देखना संभव किया कि अब्राहम का जीवन उनके जीवनों के साथ संबंधित था। बहुत मायनों में, मूसा ने ऐसा, लिखने के द्वारा किया ताकि उसके श्रोता, अब्राहम और अपने समकालीन अनुभवों के बीच समानताओं एवं भिन्नताओं को देख सकें। कभी-कभी ये समानताएं व भिन्नताएं बहुत ही मामूली थीं और अन्य समयों में ये बहुत ज्यादा विस्तृत थीं, लेकिन हर-एक घटनाओं में मूसा ने किसी भी तरह से अब्राहम के जीवन और अपने वास्तविक श्रोताओं के जीवनों के बीच इस तरह के संबंधों पर ध्यान आकर्षित किया था।

अब जब कि हमने संबंधों और वास्तविक अर्थ के मूल विचार को समझ लिया है, आइये अपने दूसरे विचार पर आते हैं, संबंधों के प्रकार जिन्हें मूसा ने अब्राहम के जीवन और अपने वास्तविक इस्राएली श्रोताओं के अनुभवों के बीच स्थापित किया था।

प्रकार

यदि किसी भी कहानी को अपने पाठकों के लिए प्रासंगिक बनना है, तो उसे ऐसे संसार को दिखाना चाहिए जिसे उसके पाठक समझ सकें। यदि कहानी का संसार वास्तविक संसार से एकदम अलग है, यदि उसके पाठक कहानी के पात्रों एवं विषयों से संबंध नहीं बना पायेंगे, तब कहानी बातचीत नहीं कर पायेगी। या इस पाठ के शब्दों में कहें तो, यदि अब्राहम का "प्राचीन संसार" मूसा और इस्राएलियों के "उनके संसार" से एकदम अलग था, तो अब्राहम के बारे में कहानियाँ इस्राएलियों

के लिए सार्थक या संबंधित नहीं हो पाती। इसलिए, मूसा ने अब्राहम के संसार और प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर जा रहे इस्राएलियों के संसार के बीच संबंधों को बनाने के लिए कड़ी मेहनत की थी।

इस पाठ में हमारे सामने प्रश्न है कि मूसा ने इन संबंधों को कैसे स्पष्ट किया। अब्राहम के बारे में अपनी कहानियों को उसने कैसे बनाया ताकि वे उसके पाठकों के संसार के साथ संबंध बना सकें? जैसे-जैसे हम इस श्रृंखला में आगे बढ़ते हैं, हम देखेंगे कि मूसा ने अपनी कहानियों का इस्राएलियों के अनुभवों के साथ तीन प्रमुख तरीकों से संबंध बनाया था। सबसे पहले, उसने अपनी कहानियों को लिखा ताकि वे इस्राएलियों को उन बातों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बताये जिसका उन्होंने अनुभव किया था। और दूसरा, उसने लिखा ताकि उसकी कहानियाँ इस्राएलियों के पास अनुसरण करने या न करने के लिए एक नमूना या उदाहरण प्रदान करें। और तीसरा, उसने यह दिखाने के लिए लिखा कि कुल-पिता के कई अनुभव इस्राएलियों के अनुभवों का पूर्वाभास था। चूंकि भविष्य के पाठों में हम कई बार संबंधों के इन प्रकारों का उल्लेख करेंगे, हमें इन सभी तीनों प्रकारों की तकनीकों का परिचय देना चाहिए जिनका उपयोग मूसा ने अपने वास्तविक श्रोताओं के लिए अब्राहम के जीवन की प्रासंगिकता को दिखाने के लिए किया था। आइये सबसे पहले देखते हैं कि मूसा के दिनों में इस्राएलियों के अनुभवों के लिए अब्राहम का जीवन किस तरह से पृष्ठभूमियों को प्रदान करता है।

पृष्ठभूमियाँ

कई तरीकों से, पहचानने के लिए यह सभी संबंधों में सबसे आसान है। उन बातों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझाने के मुख्य उद्देश्य के लिए जिसका उन्होंने अनुभव किया है सभी तरह के लोगों के लिए एक दूसरे को कहानियाँ बताना बहुत सामान्य बात है। माता-पिता अकसर अपने बच्चों के साथ ऐसा करते हैं, शिक्षक लोग अपने शिक्षण में इस तरीके को दर्शाते हैं, पास्टर लोग, यहाँ तक की राजनीतिक नेता भी ऐसा ही करते हैं। हम अकसर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रदान करने वाले तरीके से ध्यान आकृषित करने के द्वारा कहानियों का संबंध अपने श्रोताओं के साथ बनाते हैं।

अब अब्राहम के जीवन के संदर्भ में, हम इस संबंध को इस तरीके से समझा सकते हैं: हम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संबंध को पाते हैं जब मूसा उन तरीकों की ओर संकेत करता है जिसमें इस्राएल के अनुभव ऐतिहासिक रुप से अब्राहम के जीवन की घटनाओं पर आधारित थे। एक क्षण के लिए उस तरीके पर सोचें, जिसमें मूसा ने कनान की भूमि को इस्राएल के देश के समान देखने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझाया। आप स्मरण करेंगे कि निर्गमन के दौरान कई बार इस्राएली लोग आश्चर्य व्यक्त करते थे कि उन्हें क्यों कनान देश तक इतना लंबा सफर करना है। मूसा उन्हें उस देश में दाखिल होने से पहले ही रुकने की अनुमति क्यों नहीं दे रहा होगा?

कई अवसरों पर, मूसा ने इसी विषय पर अब्राहम के जीवन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की कुछ बारीकियाँ को देते हुए संबोधित किया। वचन में, उसने दिखाया कि परमेश्वर ने विशेष रुप से अब्राहम को कनान में एक देश दिया था ताकि इस्राएली लोग देख सकें वह क्यों इस बात पर जोर दे रहा था कि कनान में उनका भी एक देश था। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 15:18 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अब्राहम से बोला था:

> मिस्र के महानद से लेकर परात नामक बड़े नद तक जितना देश है, ...मैं ने तेरे वंश को दिया है। (उत्पत्ति 15:18)

ये पद मूसा के जोर देने के कारण या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्थापित करता है कि कनान पर इस्राएल का मालिकाना हक है। परमेश्वर ने उस देश को इस्राएल के महान कुल-पिता को दिया था और उसने इसे अब्राहम के वंशज होने के नाते उन्हें भी दिया था, इसलिए किसी और देश में बस जाने से बात हल नहीं होगी।

जब हम अब्राहम के जीवन की और बारीकियों की खोज करते हैं तो हम देखेंगे कि मूसा बार-बार इन्हीं प्रकार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों की ओर इशारा करता है। दूसरा प्रमुख तरीका जिससे मूसा अपने दिनों में इस्राएल के साथ अब्राहम के जीवन का संबंध बनाता है वह था उन्हें नमूने देने के द्वारा। आइये देखते हैं कि इन कहानियों में नमूने बनाना कैसे कार्य करता था।

नमूने

मूसा नहीं चाहता था कि उसके मूल पाठक अब्राहम की कहानियों को महज एक पृष्ठभूमि की सूचना के रूप में प्राप्त करें; उसने कुल-पिता के जीवन में कई परिस्थितियों का वर्णन किया ताकि वे अब्राहम के जीवन की परिस्थितियों और स्वयं अपनी परिस्थितियों के बीच कई समानताओं को देख सकें। ये समानताएं मूसा के श्रोताओं के लिए नैतिक विषयों का उल्लेख करते थे। मूसा द्वारा इन समानताओं का दिखाया जाना इस्राएलियों के लिए उदाहरणों के पालन करने और अस्वीकार करने को संभव बनाता है।

नमूनों या उदाहरणों को सिखाने के वास्ते कहानियों को बताना अपने श्रोताओं के साथ कहानियों को जोड़ने का एक सामान्य तरीका है। यह हर समय होता है। जब हम कार्य-स्थल पर किसी व्यक्ति को इस काम या उस काम को न करने की चेतावनी देते हैं, तो हम अकसर उस बारे में एक कहानी को जोड़ते हैं कि पिछली बार जब किसी ने यह गलती की थी तो उसका परिणाम क्या हुआ था। यदि हम बच्चों को पढ़ा रहे हैं कि स्कूल में उन्हें क्यों मेहनत करनी चाहिए, तो अकसर हम ऐसी कहानियों के साथ निर्देश को पक्का करते हैं जो ऐसे लोगों के उदाहरणों को बताती हैं जिन्होंने बहुत उन्नति की क्योंकि उन्होंने स्कूल में बहुत मेहनत की थी।

मूसा ने भी अपने मूल इस्राएली पाठकों के साथ अब्राहम के बारे में अपनी कहानियों को जोड़ने के लिए अधिकतर यही किया। उसने अब्राहम की कहानी को प्रस्तुत किया ताकि उसके पात्र इस्राएलियों के लिए पालन करने या अस्वीकार करने के लिए नमूनों की तरह कार्य कर सकें। एक क्षण के लिए विचार करें, मूसा किस तरह से इस्राएलियों को कनान देश में रह रहे कनानियों के खतरे के खिलाफ़ साहसी बनने के लिए प्रोत्साहित करता है। गिनती और व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों से हम जानते हैं कि मूसा के पीछे चलने वाले इस्राएलियों ने कनान देश में दाखिल होने से मना कर दिया था क्योंकि उस देश में शक्तिशाली कनानी लोग रहते थे। उनके दिल डर से घबरा गए थे क्योंकि कनानी लोग अपराजेय लगते थे। व्यवस्थाविवरण 1:26-28 में हम इस्राएल के घरानों के लिए मूसा के इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **तौभी तुम ने वहाँ जाने से नाह किया, किन्तु अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध हो कर अपने अपने डेरे में यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, कि यहोवा हम से बैर रखता है, इस कारण हम को मिस्र देश से निकाल ले आया है, कि हम को एमोरियों के वश में करके सत्यनाश कर डाले। हम किधर जाएँ? हमारे भाइयों ने यह कहके हमारे**

> **मन को कच्चा कर दिया है, कि वहाँ के लोग हम से बड़े और लम्बे हैं; और वहाँ के नगर बड़े बड़े हैं, और उनकी शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं; और हम ने वहाँ अनाकवंशियों को भी देखा है। (व्यवस्थाविवरण 1:26-28)**

एक तरीका जिससे मूसा ने कनानियों के इस डर को संबोधित किया, वह था कि अपने पाठकों को अब्राहम का उदाहरण देना जिसने अपने दिनों में कनानियों का सामना किया था। उदाहरण के लिए, हम उत्पत्ति 12:6 में अब्राहम के जीवन में कनानियों का पहला हवाला पाते हैं:

> **उस देश के बीच से जाते हुए अब्राहम...उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे (उत्पत्ति 12:6)।**

और इसी तरह से, उत्पत्ति 13:7 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **और उस समय कनानी, और परिज्जी लोग, उस देश में रहते थे (उत्पत्ति 13:7)।**

प्रतिज्ञा किए हुए देश में कनानियों की उपस्थिति का मूसा ने आस-पास की दो घटनाओं में क्यों उल्लेख किया? उसका एक उद्देश्य इस्राएलियों को दिखाना था कि अब्राहम की परिस्थिति ठीक उन्हीं के समान थी। कनानी लोग अब्राहम के दिनों में प्रतिज्ञा किए हुए देश में थे, ठीक वैसे ही जैसे वे इस्राएल में मूसा के दिनों में थे। फिर भी, अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया था और साहस के साथ उस देश में गया जिस पर कनानी लोगों का कब्जा था। इस तरह से यद्यपि उस में कनानी लोग अभी भी रहते थे, मूसा ने अपने पाठकों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने के द्वारा और उस देश में दाखिल होने के द्वारा अब्राहम के साहस का अनुकरण करने को प्रोत्साहित किया। इस तरह से अनुसरण करने के लिए अब्राहम उनका उदाहरण बना था।

जब हम अब्राहम के जीवन से होते हुए गुजर रहे हैं, तो हम कई ऐसे अनुच्छेदों को पाते हैं जो सकारात्मक और नकारात्मक उदाहरणों को पेश करते है। लेकिन तीसरे स्थान पर, ऐसे क्षण भी आते हैं जब मूसा ने यह दिखाने के द्वारा अपने पाठकों के जीवनों के साथ अब्राहम के जीवन को जोड़ा था कि कुल-पिता के जीवन में घटनाएं किस तरह से उन घटनाओं का पूर्वाभास या छाया थीं जो उसके अपने दिनों में घटी थी।

पूर्वाभास

कई मायनों में, अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों का संबंध कहानी और अपने श्रोताओं के बीच बहुत कम समानता की अपेक्षा करता है; उदाहरण के प्रासंगिक होने के लिए कहानी और श्रोताओं के बीच उदाहरण या नमूनों से ज्यादा समानता की अपेक्षा की जाती हैं। लेकिन पूर्वाभास होना तब घटित होता है जब कई सारी समानताएं पाई जाती हैं, इतनी ज्यादा कि अब्राहम का "प्राचीन संसार" इस्राएल के "उनके संसार" के बिल्कुल सटीक वैसा ही दिखाई देता हो। अब इस तरह का विस्तृत संबंध अब्राहम के जीवन की कहानियों में विरल रूप से घटित होता है, लेकिन बार-बार, मूसा ने अब्राहम के दिनों का वर्णन ऐसे तरीकों से किया है जो उसके अपने दिनों में घटनाओं के एकदम सदृश्य था।

हम में से कईयों ने यह कहावत सुनी है, "अकसर इतिहास स्वयं को दोहराता है।" लेकिन हां, हम सब जानते हैं कि ऐतिहासिक घटनाओं के दो परिवेश कभी भी बिल्कुल एक जैसे नहीं होते। परन्तु कभी-कभी घटनाएं इतनी समान होती हैं कि दूसरी घटना पहली वाली के जैसे दोहराई गई लगती है। जब बाइबल के लेखकों को भूतकाल में हुई घटनाएं अपने श्रोताओं के जीवनों में दोहराई गई प्रतीत होती दिखी, तो अकसर उन्होंने इस संबंध को स्पष्ट किया। और इस साहित्यिक तकनीक को पूर्वाभास कहते हैं।

पूर्वाभास होने का एक उदाहरण उस प्रसिद्ध घटना में दिखाई देती है जो उत्पत्ति 15:1-21 में परमेश्वर के साथ अब्राहम की वाचा का वर्णन करती है। परमेश्वर अब्राहम को वाचा के अनुष्ठान के लिए तैयारी करने के लिए आज्ञा देने के द्वारा आश्वासन देता है कि उसके वंशज एक दिन कनान देश में बसेंगे। अब्राहम कुछ जानवरों को दो भाग में काटकर और मार्ग के दोनों ओर उन कटे टुकड़ों को रखने के द्वारा तैयारी करता है। कुल-पिता के सो जाने के बाद, वह किसी चीज़ का एक दर्शन देखता है जो अपने दिनों में मूल श्रोताओं के अनुभव से नजदीकी के साथ मेल खाता था। उत्पत्ति 15:17 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **और ऐसा हुआ कि जब सूर्य अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा गया, तब एक अंगेठी जिस में से धुआं उठता था और एक जलता हुआ पलीता देख पड़ा जो उन टुकड़ों के बीच में से हो कर निकल गया। (उत्पत्ति 15:17)**

इस अनुच्छेद के बड़े संदर्भ में हम पाते हैं कि धूएं की अंगेठी और जलता हुआ पलीता जानवरों के कटे माँस के बीच स्वयं परमेश्वर के चलने का एक आश्वासन के रूप में प्रतिनिधित्व करते थे कि वह अब्राहम के वंशजों को वास्तव में प्रतिज्ञा किया हुआ देश देगा।

अब इस चित्र को लीजिए। उत्पत्ति 15:17 में अब्राहम को आश्वासन देने के लिए कि वह उसके वंशजों को प्रतिज्ञा किया हुआ देश देगा, परमेश्वर अब्राहम के आगे से एक धूएं वाली अंगेठी के रूप में गुजरता है। अब, आधुनिक पाठकों के रूप में हमें परमेश्वर के लिए यह अटपटा सा लगेगा कि वह धूएं और आग के समान प्रकट होने के द्वारा अब्राहम को आश्वासन देता है। परन्तु जब हम याद करते हैं कि मूसा ने अब्राहम के जीवन के बारे में उन इस्राएलियों के लिए लिखा जो उसके पीछे-पीछे प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर जा रहे थे, तो यह आश्चर्य की बात बिल्कुल भी नहीं लगती कि उसने इस घटना को शामिल किया। इस्राएलियों की पूरी यात्रा के दौरान, परमेश्वर इस्राएलियों के सामने कुछ इस तरह से प्रकट हुआ था जो धूएं वाली अंगेठी और जलते हुए पलीते से मेल खाती थी। उस महिमामय बादल में जो प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर उनकी अगवाई कर रहा था, परमेश्वर धूएं और आग के समान उन्हें भी प्रकट हुआ था।

अतः, इस रीति से अब्राहम के लिए परमेश्वर का प्रकटीकरण उस रीति का पूर्वाभास था जिससे मूसा के दिनों में वह इस्राएलियों के लिए प्रकट हुआ था। और जैसे अब्राहम ने देश में बसने का आश्वासन पाया था क्योंकि परमेश्वर इस रीति से उसके सामने से गुज़रा था, तो इस कहानी को सुनने के द्वारा इस्राएलियों को भी अपने दिनों में देश में बसने का आश्वासन हासिल करना चाहिए था।

दूसरा, इससे भी ज्यादा विस्तृत पूर्वाभास उत्पत्ति 12:10-20 में पाये जाने वाली मिस्र से अब्राहम के छुटकारे वाली कहानी में घटित होता है। मिस्र पर उनके दृष्टिकोण में इस्राएलियों का मार्गदर्शन करने के लिए इस अनुच्छेद को लिखा गया था। इस मामले में, मूसा ने इस पूरी कहानी को बनाया ताकि यह कहानी उसकी अगवाई में इस्राएलियों के अनुभव के साथ नजदीकी से समानान्तर

बने। उत्पत्ति 12:10-20 में कनान देश में अकाल के कारण अब्राहम मिस्र देश को जाता है, जब फिरौन सारा को अपने हरम में ले लेता है तो मिस्र में उसे देर हो जाती है, परन्तु फिरौन के घराने के ऊपर बीमारियों को भेजने के द्वारा परमेश्वर अब्राहम को छुटकारा देता है। इसके बाद फिरौन अब्राहम को मिस्र से दूर भेज देता है और अब्राहम बड़े धन के साथ मिस्र से चला जाता है।

अब्राहम के बारे में यह कहानी साफ तौर पर पीढ़ियों बाद इस्राएल देश के अनुभव का पूर्वाभास होने के लिए तैयार की गई थी। अब्राहम के समान वे भी मिस्र को गये थे क्योंकि कनान देश में अकाल था, वे वहां पर फिरौन द्वारा दास बना कर रखे गए, फिरौन के घर पर परमेश्वर द्वारा बीमारियों को भेजने के बाद वे आज़ाद हो पाये थे, फिरौन ने इस्राएलियों को छोड़ने का आदेश दिया था, और मिस्रियों के धन को लूटने के बाद इस्राएल ने मिस्र को छोड़ा था। मूसा ने जानबूझकर इस कहानी को तैयार किया ताकि यह उसके श्रोताओं के अनुभवों का पूर्वाभास बने। अब्राहम की कहानियों में इस तरह के विस्तृत पूर्वाभास बहुत कम ही हैं, लेकिन अब्राहम की कहानी में इस तरह के संबंध इधर-उधर दिखाई देते हैं।

जब हम अब्राहम के जीवन से होते हुए उसे पढ़ते हैं तो हम सभी तीन संबंधों को भिन्न तरीकों में और भिन्न समयों में देखेंगे। इस्राएलियों को उनके अनुभवों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमियां देने के द्वारा, उन्हें स्वीकार करने और अस्वीकार के लिए नमूने देने के द्वारा, और यह दिखाने के द्वारा कि किस तरह अब्राहम का जीवन उनके कई अनुभवों का पूर्वाभास था, मूसा ने अब्राहम के "प्राचीन संसार" को अपने मूल श्रोताओं के संसार "उनके संसार" के साथ जोड़ा।

अब जब कि हम संबंधों के प्रकारों को देख चुके हैं जिन्हें मूसा ने अब्राहम और अपने इस्राएली श्रोताओं के बीच स्थापित किया था, हमारे लिए यह सारांशित करना उपयोगी होगा कि अब्राहम के जीवन का प्रत्येक प्रमुख चरण मूल श्रोताओं के जीवनों के साथ कैसे संबंधित था।

कहानी का सार

आप याद करेंगे कि अब्राहम का जीवन एक-जैसे पाँच चरणों में विभाजित होता है। इनमें से प्रत्येक भाग में मूसा ने अब्राहम के बारे में कहानियों को अपने मूल श्रोताओं की परिस्थितियों से जोड़ने के तरीकों को खोजा था।

पहला, मूसा ने अब्राहम की पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभवों के बारे में उन तरीकों से बताया जो उन लोगों की पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभवों के साथ, जो मिस्र छोड़कर उसके पीछे हो लिए थे संबंध बनाता था। अब्राहम और इस्राएल दोनों एक ही परिवार से आये थे। और अब्राहम एवं इस्राएल दोनों ही को कनान देश में बसने के लिए परमेश्वर द्वारा बुलाया गया था। इसलिए, मूसा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को बताता है, अब्राहम को एक नमूने के रूप में पेश करता है, और यहाँ तक कि उन तरीकों को दिखाता कि अब्राहम का जीवन मूल श्रोताओं के अनुभवों का पूर्वाभास था।

दूसरा, मूसा ने उन तरीकों से दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के आरंभिक संपर्कों का भी वर्णन किया जो उसके श्रोताओं से संबंधित था। उसने बताया कि अब्राहम मिस्रियों के साथ कैसे व्यवहार करता है क्योंकि इस्राएल ने अपने दिनों में मिस्रियों के साथ व्यवहार किया था। उसने अब्राहम और लूत के बारे में बताया क्योंकि इस्राएलियों ने लूत के वंशजों मोआबियों और अम्मोनियों के साथ संपर्क किया था। उसने पूर्व के राजाओं और सदोम के कनानी राजा के बारे में लिखा क्योंकि इस्राएल को भी विदेशी राजाओं और कनानी शहरों के साथ वैसे ही अनुभव हुए थे।

तीसरा, मूसा ने अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा के बारे में लिखा क्योंकि इस्राएल ने भी परमेश्वर के साथ वाचा बाँधी थी। परमेश्वर के साथ अब्राहम की वाचा इस्राएल के साथ बाँधी गई वाचा का कई भिन्न तरीकों में पूर्वाभास थी।

चौथा, मूसा ने अन्य लोगों के साथ अब्राहम के बाद वाले संपर्कों के बारे में लिखा। उसने सदोम और अमोरा, लूत, और पलिश्ती अबीमेलेक के बारे में लिखा क्योंकि इस्राएल ने भी अपने दिनों में ऐसे ही लोगों का सामना किया था: कनानी शहरों, मोआबियों और अम्मोनियों और पलिश्ती लोग।

और पाँचवाँ, मूसा ने अब्राहम के वंश और मृत्यु के बारे में इस तरीके से लिखा जो उसके इस्राएल पाठकों के साथ संबंधित था। अब्राहम के विशेष पुत्र और वारिस के रूप में उसने इसहाक पर ध्यान-आकर्षित किया क्योंकि इस्राएली श्रोता इसहाक से पैदा हुए थे। सारा के लिए कब्रिस्तान के ऊपर उसने ध्यान खींचा क्योंकि वह जगह उस देश में थी जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने इस्राएल से की थी। उसने अब्राहम के अन्य पुत्रों पर ध्यान-आकृषित किया जो अब्राहम के वारिस नहीं थे, विशेषकर इश्माएल पर, क्योंकि इस्राएल को अपने दिनों में इश्माएलियों से निपटना था।

अतः हम देखते हैं कि जब मूसा अब्राहम के बारे में लिख रहा था तो वह अपनी कहानी और अपने इस्राएली श्रोताओं के अनुभवों के बीच कई अलग-अलग संबंधों को बनाता है। और उसने उन इस्राएलियों के लिए महत्वपूर्ण अगवाई प्रदान करने के वास्ते ऐसा किया जो उसके पीछे-पीछे प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर जा रहे हैं।

अब जबकि हम उन प्रमुख तरीकों को देख चुके हैं जिनसे मूसा ने अब्राहम के जीवन को अपने मूल इस्राएली श्रोताओं के साथ जोड़ा, हमें वास्तविक अर्थ के बारे में दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने की आवश्यकता है। मूल श्रोताओं के लिए इन संबंधों के क्या निहितार्थ थे? अब्राहम के जीवन की कहानियों से उन्हें क्या सीखना था?

निहितार्थ

इसमें शायद ही शंका होनी चाहिए कि जब लोग उत्पत्ति में अब्राहम के जीवन जैसे जटिल इतिहास को लिखने के लिए समय निकालते हैं, उनके पास सभी तरह के प्रेरणाएं एवं लक्ष्य होते हैं। वे चाहते हैं कि उनके श्रोताओं पर उनकी कहानी का बहुसंख्यक प्रभाव पड़े। वास्तव में, जब मूसा ने अब्राहम के जीवन को लिखा था, तो उसके उद्देश्य इतने ज्यादा थे कि उनको पूरी रीति से खोजना असंभव है, और उन सभी को कुछ ही वाक्यों में कह देना तो और भी ज्यादा असंभव है। साथ ही, उन प्रमुख निहितार्थों को सारांशित करना संभव है जिन्हें मूसा चाहता था कि उसके मूल श्रोता अब्राहम के बारे में उसकी कहानियों से सीखेंगे।

अब्राहम के जीवन के वास्तविक निहितार्थ की खोज हम तीन चरणों में करेंगे। सबसे पहले, हम उस मूलभूत प्रभाव का जिसका मूल श्रोताओं पर होने के लिए इन कहानियों का लिखा गया था वर्णन करेंगे। दूसरा, हम देखेंगे कि इन कहानियों का प्रभाव किस तरह से अब्राहम के जीवन के चार प्रमुख विषयों में प्रकट होता है। और तीसरा, अब्राहम के बारे में मूसा की कहानियों में प्रत्येक पाँच चरणों के मूल निहितार्थों को हम सारांशित करेंगे। आइये पहले उन मूलभूत प्रभावों को देखते हैं जिनके लिए इन कहानियों को डिज़ाइन किया गया था।

मूल प्रभाव

बहुत ही सामान्य शब्दों में, अब्राहम की कहानी के उद्देश्य को इस तरह से सारांशित करने में मदद मिलती है: मूसा ने अब्राहम के बारे में यह सिखाने के लिए लिखा कि उन्हें क्यों और कैसे मिस्र को पीछे छोड़ना है और प्रतिज्ञा किए हुए देश को जीतने के लिए आगे बढ़ना जारी रखना है। दूसरे शब्दों में, अब्राहम के जीवन में स्वयं के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखने के द्वारा, अब्राहम की कहानियों में अनुसरण करने या न करने के लिए नमूनों या उदाहरणों को पाने के द्वारा, और पहचानने के द्वारा कि अब्राहम का जीवन उनके जीवन का किस रीति से पूर्वाभास था, मूसा के पीछे चलने वाले इस्राएली उन तरीकों को देख सकते थे जिनके द्वारा उन्हें अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य का अनुसरण करना था।

हालांकि पवित्र शास्त्र और यहां तक की स्वयं यीशु मसीह की गवाही के आधार पर हम लोग आश्वस्त हो सकते हैं कि उत्पत्ति की पुस्तक मूसा के दिनों से है, हमें ध्यान देना चाहिए कि हम लोग सटीकता से निश्चिंत नहीं हो सकते है कि जिस तरह से ये कहानियाँ अब हमारे पास है उन्हें मूसा ने कब पूरा किया था। चाहे कुछ भी हो, हम निश्चिंत हो कर कह सकते हैं कि अब्राहम के इतिहास को लिखते समय मूसा का प्रमुख विषय किसी भी पीढ़ी के लिए ठीक ऐसा ही होता। मिस्र देश के ऊपर से उनके हृदय को हटाने और प्रतिज्ञा किए हुए देश पर अधिकार जमाने के लिए उसने अब्राहम के बारे में लिखा था।

मूल श्रोताओं के लिए इस सामान्य निहितार्थ को शायद ही बड़ा-चढ़ा कर बताया जाए। मूसा ने अपने पीछे चल रहे इस्राएल देश को कभी भी मिस्र न लौटने और कनान पर विजय प्राप्त करने को प्रोत्साहित करने के लिए लिखा था और यही वह विस्तृत निहितार्थ है जो अब्राहम के जीवन के हमारे आधुनिक अनुप्रयोग में हमारा मार्गदर्शन करती है। मसीही होने के नाते हम एक यात्रा पर हैं, ऐसी यात्रा जो वास्तव में उस यात्रा को पूरा करती है जिसे मूसा के दिनों में इस्राएलियों ने शुरु किया था। हम नए आसमान और नई पृथ्वी की ओर आगे बढ़ रहे हैं। इसलिए, अब्राहम की कहानियों को उचित रीति से अपने जीवनों में लागू करने के लिए, हमें उन तरीकों पर ध्यान अवश्य देना चाहिए जैसे उन्होंने कनान देश की ओर आगे बढ़ते रहने के लिए मूल श्रोताओं को निर्देशित किया था।

इस महत्वपूर्ण केंद्र-बिंदु को थोड़ा और समझने के लिए, उत्पत्ति के इस भाग में उन चार प्रमुख विषयों की ओर लौटने के द्वारा जिन्हें हम पहले ही पहचान चुके हैं हमें मूसा के उद्देश्य पर और बारीकी से गौर करना चाहिए।

प्रमुख विषय

आपको याद होगा कि इस पाठ में हमने पहले सुझाव दिया था कि उत्पत्ति 12:1-3 कम से कम चार विषयों को पेश करता है जो कुल-पिता वाले इतिहास के इस भाग को एकता प्रदान करता है। ये चार विषय उस महत्वपूर्ण प्रभाव को दिखाती हैं जिनके होने लिए मूसा ने अपनी कहानियों को रचा था। सबसे पहले, उसने अब्राहम के लिए ईश्वरीय अनुग्रह पर ध्यान केंद्रित किया; दूसरा उसने अब्राहम की वफादारी पर ध्यान आकृषित किया; तीसरा, उसका ध्यान अब्राहम के लिए आशीषों पर था; और चौथा, उसने अब्राहम के माध्यम से आने वाली आशीषों पर ध्यान-केंद्रित किया था। अब्राहम के बारे में लिखने के वास्तविक उद्देश्य को इन चार विषयों के संदर्भ में सोचने पर मदद मिलती है।

ईश्वरीय अनुग्रह

पहले स्थान पर, मूसा ने उन तरीकों के बारे में लिखा जिनके द्वारा परमेश्वर ने अब्राहम के लिए दया, करुणा दिखाई थी। व्यापक रुप से, हम पहले ही देख चुके हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति बहुत अनुग्रह दिखाया था, परमेश्वर के साथ उसके आरंभिक वर्षों के संबंधों में और रोज़मर्रा के उसके पूरे जीवन भर में भी। मूसा के दिनों में इस्राएलियों को स्मरण दिलाने के लिए ईश्वरीय अनुग्रह का अभिप्राय बनाया गया था कि परमेश्वर ने उन लोगों पर भी बड़ी दया व करुणा दिखाई थी। परमेश्वर ने उन पर आरंभिक अनुग्रह किया था जब वह उन्हें मिस्र देश से सीनै तक लाया था। और दिन ब दिन, जब वह उन्हें कनान देश पर भविष्य की विजय के तैयार कर रहा था तब भी वह उन पर करुणा दिखाना जारी रखे था।

निर्गमन 19:4 में जाने पहचाने शब्द जिन्हें परमेश्वर ने सीनै पर बोला था परमेश्वर के अनुग्रह का इस प्रकार से बयान करते हैं:

> कि तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया, और तुम को उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। (निर्गमन 19:4)।

अफसोस की बात है, मूसा की अगवाई में चलने वाले इस्राएली लोग भूल गए थे कि परमेश्वर से उन्होंने कितनी ज्यादा दया व करुणा प्राप्त की थी। शुरुआत में ही उन्होंने शिकायत की थी कि परमेश्वर और मूसा ने मिस्र के सुखों से उनको अलग हटा कर उन्हें धोका दिया था। जंगल में उन्होंने भोजन और पानी के लिए शिकायत की थी। वे सोचते थे कि जब वह उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश को कब्जाने हेतु वहाँ प्रवेश के लिए बुला रहा था तो परमेश्वर उनसे बहुत ज्यादा की माँग कर रहा था। इसलिए, अपने मूल श्रोताओं को वे तरीके याद दिलाने के लिए जिनसे परमेश्वर ने उन्हें आशीषित किया था, अर्थात वो सारी करुणाएं जिन्हें परमेश्वर ने उनके ऊपर बारम्बार दिखाया था, मूसा बार-बार उन तरीकों पर जोर देता है जिनसे परमेश्वर ने अब्राहम पर दया दिखाई थी।

अब्राहम की वफादारी

दूसरे स्थान पर, हमने देखा है कि उन कई तरीकों पर ध्यान आकृषित करने के द्वारा जिनमें परमेश्वर ने अब्राहम को अपनी आज्ञा मानने के लिए जिम्मेदार ठहराया, मूसा ने अब्राहम की वफादारी पर भी जोर दिया था। मूसा ने बार-बार जोर दिया कि परमेश्वर कुल-पिता से अपनी आज्ञाओं के प्रति वफादार बनने की अपेक्षा करता था क्योंकि यही केंद्र-बिन्दु उन इस्राएलियों के लिए भी प्रासंगिक था जो उसके पीछे चल रहे थे। वफादारी की शर्त पर महत्व ने मूसा के दिनों में इस्राएलियों से भी बातें की। निर्गमन 19:4-5 में उस तरीके को सुनिए जिसमें सीनै पर्वत पर परमेश्वर इस्राएलियों को संबोधित करना जारी रखता है:

> **कि तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या क्या किया;तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे,**

और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। (निर्गमन 19:4-5)।

यहाँ पर ध्यान दीजिए कि निज धन ठहरने की आशीष इस्राएल की वफादारी पर निर्भर थी। हालांकि परमेश्वर ने देश पर अपनी बहुत करुणा दिखाई थी, प्रत्येक पीढ़ी में हर एक व्यक्ति की स्थिति इस बात पर निर्भर करती थी कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति किस रीति से प्रतिक्रिया की थी।

अब, जैसा कि हमने देखा, अब्राहम को दी गई प्रमुख जिम्मेदारी थी कि वह कनान देश को जाए। मूसा ने इस जिम्मेदारी पर जोर दिया क्योंकि वह चाहता था कि उसके पीछे चलने वाले इस्राएली भी कनान देश के लिए मार्ग में बने रहें। और निश्चित रूप से, जब मूसा अब्राहम की अन्य जिम्मेदारियों के बारे में लिख रहा था, उसने अपने दिनों में इस्राएलियों को उनकी अन्य जिम्मेदारियों को सिखाने के लिए ऐसा किया था। अब्राहम से वफादारी की कई शर्तें इस तथ्य को स्पष्ट बताती थी कि मूल श्रोताओं को भी परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति वफादार एवं विश्वासयोग्य होना था।

अब्राहम के लिए आशीषें

तीसरे स्थान पर, हमने अब्राहम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा की हुई आशीषों के महत्व को भी देखा है। अब्राहम के बारे में अपनी कहानियों में, मूसा ने अब्राहम और उसके वंशजों के लिए एक महान देश, समृद्धि, और एक महान नाम वाली प्रतिज्ञा की हुई आशीषों पर ध्यान-केंद्रित किया था। और कई अवसरों पर हम देखते भी हैं कि अब्राहम ने अपने जीवन काल में ही इन आशीषों का पूर्वानुभव किया था। और कई दूसरे अवसरों पर अब्राहम की कहानियाँ आने वाली पीढ़ियों में इन आशीषों के भविष्य में पूरा होने पर ध्यान-केंद्रित करती थीं। मूसा ने अब्राहम की आशीषों पर इस तरह से ध्यान-केंद्रित किया क्योंकि ये आशीषें अब्राहम के वंशजों के लिए भी थीं, यानी इस्राएल के लोग जिनकी मूसा अगवाई कर रहा था। इस्राएल के लोगों को भी महान आशीषों की प्रतिज्ञा की गई थी। प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने के बाद उन्हें एक महान राष्ट्र बनना, अभूतपूर्व समृद्धि का अनुभव करना और एक महान नाम प्राप्त करना था।

वास्तव में, बहुत कुछ अब्राहम के ही समान, उत्पत्ति की पुस्तक के लिखे जाने के समय तक इस्राएल ने भी इन आशीषों के पूर्व-स्वाद का अनुभव किया था। उन्होंने पहले ही से अपने स्वयं के जीवनों में इनमें से कुछ प्रतिज्ञाओं को पूरा होते देखना आरंभ कर दिया था। फिर भी, प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने के बाद भी इन आशीषों का भविष्य में कई रीतियों से पूरा होना बाकी था। निर्गमन 19:6 में परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर इस्राएल के लिए इन भविष्य की आशीषों के बारे में इस तरह से बोला था:

और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। (निर्गमन19:6)।

अपने दिनों में इस्राएलियों की आशाओं को बढ़ाने के लिए मूसा ने उन आशीषों के बारे में लिखा जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी। जैसे-जैसे वे कुल-पिता के लिए परमेश्वर की आशीषों के बारे में

पढ़ते हैं, तो वे स्पष्ट रीति से देख पाते हैं कि किस तरह से परमेश्वर के पास उनके लिए भी भंडार में महान आशीषें थीं।

अब्राहम के माध्यम से आशीषें

चौथे स्थान पर, हमने यह भी देखा कि अब्राहम की कहानियाँ उजागर करती थीं कि कुल-पिता के माध्यम से परमेश्वर की आशीषें पूरे संसार के लिए आयेंगी। जैसा कि आपको याद होगा, अब्राहम के माध्यम से आशीषें साधारण रीति से नहीं आयेंगी। उत्पत्ति 12:3 में हम ने देखा कि अब्राहम के दोस्तों को आशीषित करने और उसके शत्रुओं को श्राप देने की प्रक्रिया द्वारा परमेश्वर अब्राहम को सफलता देगा। विभिन्न प्रकार की घटनाओं में, मूसा दिखाता है कि जब अब्राहम विभिन्न राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करते लोगों के साथ संपर्क बनाता है तो किस तरह से उसके अपने जीवन काल में ही परमेश्वर ने उसे इस प्रक्रिया का पूर्वानुभव कराया। और कई अवसरों पर अब्राहम के जीवन की अपनी कहानियों में, मूसा ने दर्शाया कि आशीषों का कई रीति से पूरा होना भविष्य में आयेगा।

मूसा ने इस उद्देश्य पर इसलिए जोर दिया था क्योंकि यह इस्राएल के लोगों के लिए जो उसके दिनों में उसके पीछे चले रहे थे बहुत ज्यादा प्रासंगिक था। परमेश्वर ने उन्हें दूसरों के लिए आशीष बनने में सफल होने का आश्वासन दिया था क्योंकि वह उनके दोस्तों को आशीष और उनके शत्रुओं को श्राप देगा। जब इस्राएली लोग अपने दिनों में दूसरे लोगों के विभिन्न समूहों के साथ संपर्क बनाते थे तो उन्होंने भी इन प्रतिज्ञाओं का पूर्वानुभव देखा था। कई अवसरों पर उन्होंने पहले ही देख लिया था कि परमेश्वर ने उन्हें जो उनके दोस्त थे आशीषित किया और उनके शत्रुओं को शापित किया। और इससे बढ़कर, जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करें और परमेश्वर के राज्य को दुनिया को कोनों में फैलाते हैं तो इन आशीषों का भविष्य में पूरा होने पर इस्राएलियों की आँखों को मोड़ने के द्वारा मूसा ने इन विषयों पर भी ध्यान दिया था। जैसा कि हमने अभी देखा, निर्गमन 19:6 में परमेश्वर ने इस्राएल से यह कहा:

और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। (निर्गमन19:6)।

याजकों के राज्य वाले देश का दर्शन सिर्फ यही नहीं दर्शाता था कि केवल उनके ही देश को परमेश्वर की सेवा करने वाले पवित्र लोग बनने के सौभाग्य के साथ आशीषित किया जायेगा, परन्तु साथ में दर्शाता था कि इस्राएल के वंशज परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरे संसार भर में पूरा करेंगे। जैसे-जैसे मूसा ने इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर चलने के लिए प्रेरित किया, अब्राहम के बारे में उसकी कहानियाँ उनके मनों में इस दर्शन को बैठाने के लिए बनाई गई कि कैसे परमेश्वर अपने राज्य को फैलाने के लिए इस्राएल का इस्तेमाल करेगा और इसके फलस्वरूप अपनी आशीषों को पूरे संसार के लिए देगा।

अब जब कि हमने मूल श्रोताओं के लिए अब्राहम के जीवन के चार प्रमुख विषयों के निहितार्थ को देख लिया है, तो आइये कुल-पिता के जीवन की संरचना में प्रत्येक प्रमुख चरण को देखने के द्वारा संक्षेप में मूल श्रोताओं पर अब्राहम की कहानियों के प्रभाव को सारांशित करते हैं जैसा कि इसका वर्णन उत्पत्ति में है।

पाँच चरण

आपको याद होगा कि अब्राहम के जीवन की कहानियाँ पाँच प्रमुख चरणों में विभाजित होती हैं। सबसे पहला, 11:10-12:9 में अब्राहम की पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभव; दूसरा, 12:10-14:24 में दूसरे लोगों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के शुरुआती सम्पर्क; तीसरा, 15:1-17:27 में वह वाचा जिसे परमेश्वर अब्राहम के साथ बाँधता है; चौथा,18:1-21:34 में अन्य लोगों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के बाद वाले सम्पर्क; और पाँचवाँ, 22:1-25:18 में अब्राहम का वंश और उसकी मृत्यु।

इनमें से प्रत्येक प्रमुख चरण कई छोटे भागों या घटनाओं में विभाजित होता है। हम संक्षेप में विषय-वस्तु और कुछ प्रमुख निहितार्थ के सार देंगे जो कि इन घटनाओं में मूल श्रोताओं के लिए थे जिनके लिए मूसा ने इन्हें लिखा।

पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभव

अब्राहम के जीवन का पहला चरण, उसकी पृष्ठभूमि और उसके आरंभिक अनुभव, अब्राहम के परिवार और उस समय का वर्णन करती हैं जब परमेश्वर ने सबसे पहले अब्राहम को अपनी सेवा में बुलाया था। सामान्य शब्दों में, मूसा ने अपने मूल इस्राएली श्रोताओं को यह दिखाने के लिए इस पहले चरण को लिखा कि अब्राहम के जीवन की इन घटनाओं से वे अपनी स्वयं की पारिवारिक पृष्ठभूमि और परमेश्वर से अपनी बुलाहट के बारे में कैसे सीख सकते हैं।

यह पहला चरण तीन घटनाओं या भागों में विभाजित होता है। अब्राहम का जीवन वंशावली के साथ शुरु होता है जो कि 11:10-10:26 में ईश्वरीय द्वारा अनुगृहित अब्राहम की वंशावली को प्रस्तुत करता है। इन पदों से यह पता चलता है कि शेम के परिवार में अब्राहम उच्च दर्जे का व्यक्ति था, ऐसा परिवार जिसे परमेश्वर के सामने परमेश्वर के विशेष चुने हुए लोगों के समान अनुगृहित स्थिति हासिल थी। बदले में इस वंशावली ने मूसा के मूल इस्राएली श्रोताओं याद दिलाया होगा कि अब्राहम के पारिवारिक वंशजों के रूप में, वे भी इसी अनुगृहित हैसियत के साझेदार थे। वे परमेश्वर के विशेष चुने हुए लोग थे।

अब्राहम की पृष्ठभूमि और उसके आरंभिक अनुभवों का दूसरा प्रकरण 11:27-32 में एक अन्य वंशावली है। संक्षेप में, यह अनुच्छेद तेरह को एक मूर्ति-पूजक के रूप में दर्शाता है जिसने कनान देश को जाने की कोशिश की परन्तु विफल रहा। मूसा के मूल श्रोताओं ने आसानी से अब्राहम की और स्वयं अपनी परिस्थितियों के बीच समानता को देख लिया होगा। उनके माता-पिता भी मूर्ति-पूजा में शामिल रहे थे और वे भी कनान देश पहुँचने में असफल रहे थे। इसलिए, जैसे अब्राहम को अपने पिता की असफलताओं को दोहराने से बचना था, इस्राएलियों को भी जो मूसा के पीछे चल रहे थे अपनी माताओं और अपने पिताओं की असफलताओं को दोहराने से बचना था, यानी निर्गमन के पहली पीढ़ी वाले मूर्ति-पूजक जो कनान देश पहुँचने में असफल रहे थे।.

अब्राहम की पृष्ठभूमि और उसके आरंभिक अनुभव 12:1-9 में फिर कनान में अब्राहम के प्रवास की कहानी की ओर मुड़ते हैं। परमेश्वर ने कनान के लिए अब्राहम को बुलाया, और कई कठिनाइयों के बावजूद अब्राहम ने परमेश्वर की बुलाहट का पालन किया। ठीक इसी तरह, परमेश्वर ने मूसा के मूल इस्राएली श्रोताओं को कनान देश के लिए बुलाया था, और उन्हें भी कई कठिनाइयों के बावजूद आज्ञा पालन करनी थी। इसलिए कनान के लिए अब्राहम के प्रवास की कहानी का वास्तविक निहितार्थ था कि

मूसा के दिनों में इस्राएली लोगों को भी अब्राहम के कदमों पर चलना और प्रवास करना था जैसा कि उसने कनान देश के लिए किया था।

इन तीन भागों के साथ, मूसा ने अब्राहम के जीवन का परिचय दिया और अपने मूल श्रोताओं के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन की पेशकश की जब वे परमेश्वर के लिए अपनी सेवा में चुनौतियों का सामने कर रहे थे।

दूसरे लोगों के साथ शुरुआती सम्पर्क

अब्राहम के जीवन की उत्पत्ति की घटना में दूसरा प्रमुख चरण कुल-पिता के शुरुआती संपर्कों पर ध्यान-केंद्रित करता है। ये अध्याय कुल-पिता को दूसरे समूहों के लोगों के साथ विभिन्न तरीकों से संपर्क बनाते हुए दर्शाते हैं ताकि मूल इस्राएली पाठकों का मार्गदर्शन हो जब वे दूसरों के साथ संपर्क बनाते हैं।

पहले प्रकरण में, मूसा ने उत्पत्ति 12:10-20 में मिस्र देश से अब्राहम के छुटकारे का वर्णन किया। आपको याद होगा कि अकाल की वजह से कुल-पिता मिस्र गए, लेकिन परमेश्वर ने फिरौन के घराने पर बीमारी को भेजने के द्वारा उन्हें मिस्रियों की गुलामी से छुटकारा दिया। परमेश्वर के महान छुटकारे के कारण अब्राहम बहुत धन के साथ मिस्र को छोड़ता है और कभी वापस नहीं लौटता है। अब्राहम ने अच्छी तरह से जान लिया था कि मिस्र उसका घर नहीं था।

मूसा के मूल इस्राएली पाठक देख सकते थे कि उनके अपने अनुभव अब्राहम की कहानी के कई पहलुओं को दर्शाते थे। अकाल की वजह से वे मिस्र देश को गए थे, उन्हें भी छुटकारा मिला जब परमेश्वर ने मिस्रियों पर बीमारियों को भेजा था, और उन्होंने मिस्रियों से मिले बहुत धन के साथ मिस्र देश को छोड़ा था। दुर्भाग्य से, जब अपनी यात्रा में इस्राएलियों ने कठिनाइयों का सामना किया, तो उनमें से कईयों ने मिस्र वाले जीवन को आदर्श बना डाला और लौटना चाहा। इस प्रकरण ने मूल श्रोताओं को स्पष्ट कर दिया होगा कि मिस्र उनका घर नहीं था। उन्हें याद रखना था कि कैसे परमेश्वर ने अनुग्रहकारी होकर उन्हें छुटकारा दिया था, और मिस्र एवं मिस्रियों को बहुत दूर छोड़ना था।

अब्राहम का दूसरे लोगों के साथ आरंभिक संपर्कों का दूसरा भाग 13:1-18 में लूत के साथ हुए विवाद की कहानी है। यह अब्राहम के दासों और लूत के दासों के बीच विवाद की एक जानी-पहचानी कहानी है, जहाँ पर दोनों समूह अपनी भेड़ों के लिए प्राकृतिक संसाधनों के लिए लड़े थे। इस विवाद में, अब्राहम ने लूत के साथ दयालुता का व्यवहार किया था, और उसे शांति के साथ उसके चुने हुए प्रदेश में रहने की अनुमति दी। उत्पत्ति के मूल पाठकों को यह समझने में जरा भी दिक्कत नहीं हुई होगी कि यह कहानी उनके लिए क्या मायने रखती थी। व्यवस्थाविवरण 2 के अनुसार, जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर यात्रा कर रहे थे तो मूसा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी थी कि लूत के वंशजों के साथ दयालुता से व्यवहार करना, और उन्हें उनके पैतृक देश में शांति से रहने देना। इसके फलस्वरूप, लूत के प्रति अब्राहम के दया वाले व्यवहार ने इस्राएलियों को दिखाया था कि उन्हें अपने दिनों मोआबियों के साथ कैसा व्यवहार करना था।

अब्राहम का दूसरे लोगों के साथ आरंभिक संपर्कों का तीसरा प्रकरण 14:1-24 में अब्राहम द्वारा लूत का बचाव है। इस जटिल कहानी ने विवरण दिया कि कैसे अब्राहम ने शक्तिशाली, अत्याचारी राजाओं को हराया जो दूर से आये थे, और किस तरह से इन अत्याचारी राजाओं से लूत को बचा कर उस पर और दयालुता दिखाई। इस कहानी ने मूसा के पीछे चल रहे इस्राएलियों से एकदम स्पष्ट रूप से

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

बात की। जब इस्राएल मोआबियों और अम्मोनियों के प्रदेशों से होकर गुजर रहा था, जो कि लूत के वंशज थे, तो इस्राएल की सेना ने अत्याचारी राजाओं अमोरियों के सिहोन, और बाशान के राजा ओग को हराया, इन दोनों ने ही मोआबियों और अम्मोनियों को उत्पीड़ित किया था। मोआबियों और अम्मोनियों को इस रीति से बचाने के द्वारा, इस्राएल ने उस नमूने का पालन किया जिसे अब्राहम ने उनके लिए निर्धारित किया था।

और इस तरह अब्राहम के जीवन के इस चरण के प्रत्येक प्रकरण में, अब्राहम को इस्राएलियों के लिए अपने समय में पालन करने हेतु एक नमूने के समान पेश किया गया था।

परमेश्वर के साथ वाचा

अब हम अब्राहम के जीवन के तीसरे प्रमुख चरण पर आते हैं, वह वाचा जिसे 15:1-17:27 में परमेश्वर अब्राहम के साथ बाँधता है। सामान्य शब्दों में, यह चरण कुल-पिता के साथ परमेश्वर की वाचा पर उन तरीकों से ध्यान-आकृषित करता है जो परमेश्वर के साथ इस्राएल के वाचा वाले संबंध के चरित्र को उजागर करता है। ये अध्याय तीन मुख्य भागों में विभाजित होते हैं।

पहला प्रकरण 15:1-21 में विशेष रूप से अब्राहम के लिए परमेश्वर की वाचा की प्रतिज्ञाओं पर केंद्रित है। यह अध्याय उस समय की प्रसिद्ध घटना है जब परमेश्वर अब्राहम के साथ वाचा को बाँधता है। परमेश्वर ने अब्राहम को संतान और देश देने की प्रतिज्ञा की। विशेष रूप से, परमेश्वर ने वादा किया कि अब्राहम के वंशज बहुसंख्या होंगे, और एक विदेशी राज्य में सताव के समय के बाद, अब्राहम के वंशजों को वापस प्रतिज्ञा किए हुए देश में लाया जायेगा। यह अनुच्छेद इस्राएलियों को याद दिलाने के लिए बनाया गया था कि परमेश्वर ने ठीक ऐसी ही वाचा इस्राएल के साथ मूसा के माध्यम से बाँधी थी। और इससे भी अधिक, यह उन्हें दिखाता था कि वे स्वयं अब्राहम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरे होने का अनुभव कर रहे थे। इस्राएली लोग अब्राहम के प्रतिज्ञा किए हुए वंशज थे, और वे उसी देश को लौट रहे थे जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनके कुल-पिता से की थी। इन तथ्यों पर शक करने का अर्थ था उन अनुग्रहकारी वाचा वाली प्रतिज्ञाओं पर शक करना जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी और मूसा के साथ जिनकी दोबारा पुष्टि की थी।

अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा पर केंद्रित दूसरा प्रकरण 16:1-16 में हाजिरा के साथ कुल-पिता की विफलता है। यह दुखद कहानी याद दिलाती है कि कैसे सारा की मिस्री दासी, हाजिरा के द्वारा एक बच्चे की कोशिश करने से अब्राहम और सारा परमेश्वर की वाचा वाली प्रतिज्ञाओं से पलट गए। अब्राहम और सारा परमेश्वर के वाचा वाली प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करने में असफल रहे, परन्तु परमेश्वर ने बेटे इश्माएल को अब्राहम के सच्चे बीज के समान स्वीकार न करके उनकी वैकल्पिक योजना को खारिज कर दिया। मूसा के मूल श्रोताओं ने वाचा में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से बार-बार पीछे हटे और मिस्र के सुखों की इच्छा की थी। और अब्राहम के जीवन की इस कहानी ने उन्हें सिखाया कि जैसे अब्राहम की योजना को खारिज कर दिया गया था, वैसे ही परमेश्वर की योजना के खिलाफ़ उनके विकल्पों को भी खारिज कर दिया जाएगा।

अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा पर ध्यान-केंद्रित करने वाला तीसरा प्रकरण 17:1-27 में अब्राहम के लिए वाचा की शर्त वाली घटना है। इस अनुच्छेद में, परमेश्वर की योजना का पालन करने में विफल होने पर परमेश्वर ने कुल-पिता का सामना किया। यहोवा परमेश्वर ने अब्राहम और उसकी संतानों पर लागू किए जाने वाले वाचा के चिन्ह के रूप में खतना की विधि को शुरू करने के द्वारा वाचा

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

के प्रति वफादारी की आवश्यकता को दोबारा से निश्चित किया। इस चिन्ह के द्वारा, परमेश्वर ने अब्राहम को याद दिलाया कि उसकी वाचा वाले संबंध में वफादारी की जिम्मेदारी शामिल है, और यह वफादारी महान आशीषों की ओर ले जायेगी। अपने दिनों में वफादार रहने में असफल इस्राएलियों का सामना करने के लिए और वाचा के प्रति वफादार रहने की इस्राएलियों की आवश्यकता को दोबारा निश्चित करने के लिए मूसा ने अब्राहम की वाचा के इस पहलू को बताया। केवल जब तक इस्राएली लोग वाचा वाले अपने परमेश्वर के प्रति वफादार रहते वे सही मायनों में उसकी महान आशीषों की आशा कर सकते थे।

इसलिए, अब्राहम के जीवन का केंद्र-बिन्दु, परमेश्वर के साथ उसकी वाचा, इस्राएल के लिए परमेश्वर की आश्चर्यजनक प्रतिज्ञाओं के अनुग्रह के प्रति ध्यान-आकृषित करती थी। लेकिन साथ में यह अपने श्रोताओं को बलपूर्वक याद कराती थी कि वे वाचा वाले अपने परमेश्वर के प्रति वफादारी से सेवा दिखाने के लिए बाध्य थे।

दूसरे लोगों के साथ बाद वाले संपर्क

अब हम अब्राहम के जीवन के चौथे चरण पर आते हैं: 18:1-21:34 में दूसरे लोगों के साथ उसके बाद वाले संपर्क। इन अध्यायों में अब्राहम ने विभिन्न प्रकार के लोगों का सामना किया जो मूसा के दिनों में रह रहे लोगों के साथ संबंधित थे। अब्राहम ने सदोम और अमोरा, लूत, अबीमेलेक और इश्माएल के कनानी निवासियों के साथ संपर्क बनाया था। सामान्य शब्दों में, इन लोगों के साथ अब्राहम के संपर्कों ने इस्राएलियों को सिखाया कि उन्हें अपने दिनों के कनानियों, मोआबियों और अम्मोनियों, और पलिश्तियों और इश्माएलियों के साथ कैसा व्यवहार करना है।

कुल-पिता के जीवन के इस भाग की पहली कहानी 18:1-19:38 में सदोम और अमोरा की घटना है। यह प्रसिद्ध कहानी दुष्ट कनानी शहरों के खिलाफ़ ईश्वरीय न्याय के खतरे का बयान करती है। यह उन शहरों में रह रहे धर्मी लोगों के लिए अब्राहम की चिंता, और इन शहरों के विनाश एवं साथ में लूत के बचाव के बारे में बताती हैं। ये घटनाएं मूसा के मूल श्रोताओं के सामने आने वाली परिस्थिति के लिए प्रत्यक्ष रूप से बाते करती हैं। इन बातों ने उन्हें समझने में मदद की कि उनके दिनों में लोगों के साथ क्या घटित हो रहा है: कनानियों के खिलाफ़ परमेश्वर की धमकी, कनानियों के बीच रह रहे धर्मीयों के लिए उन्हें जो चिंता होनी थी (जैसे राहाब जिसका सामना वे यरीहों शहर में करेंगे), वह विनाश जो कनानी शहरों के खिलाफ़ निश्चित आने वाला था, और लूत के वंशजों मोआबियों और अम्मोनियों के साथ उनके संबंध।

दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के बाद वाले संपर्कों का दूसरा भाग 20:1-18 में प्रकट होता है। इस कहानी में अब्राहम एक बार फिर देश के निवासियों के लिए प्रार्थना करता है, अर्थात पलिश्ती अबीमेलेक के लिए। आपको याद होगा कि अबीमेलेक ने न जानते हुए कि सारा अब्राहम की पत्नी है, सारा को अब्राहम से लेकर अब्राहम के भविष्य को जोखिम में डाला था। इसके बाद, परमेश्वर अबीमेलेक के खिलाफ़ दंड लाता है, और अबीमेलेक अपने कर्मों से पश्चाताप करके धर्मी साबित होता है। इस पश्चाताप के फलस्वरूप, अब्राहम ने अबीमेलेक की ओर से प्रार्थना की, और अब्राहम एवं अबीमेलेक ने एक दूसरे के साथ स्थायी शांति और दोस्ती का आनंद लिया।

इस कहानी ने मूसा के दिनों में इस्राएलियों से उनके दिनों में पलिश्तियों के लिए जो दृष्टिकोण उन्हें रखना था उसके बारे में बात की थी। विभिन्न तरीकों से, पलिश्तियों ने इस्राएलियों को डरा रखा

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

था। लेकिन जब परमेश्वर के दंड के खतरे ने पलिश्तियों में पश्चाताप को पैदा किया, इस्राएलियों को उनकी ओर से प्रार्थना करनी थी, और उनके साथ स्थायी शांति का आनंद लेना था।

21:1-21 में पाई जाने वाली, इस भाग की तीसरी कहानी, अब्राहम के बेटों इसहाक और इश्माएल की बीच कठिन रिश्ते पर केंद्रित है। इसहाक और इश्माएल दोनों ही अब्राहम के पुत्र थे। लेकिन जब उनके बीच तनाव बढ़ गया, तो इश्माएल को परिवार से अलग करने के लिए परमेश्वर ने अब्राहम को निर्देश दिया। परमेश्वर ने फिर भी इश्माएल को आशीष दी, परन्तु यह एकदम स्पष्ट कर दिया कि अब्राहम का उत्तराधिकारी केवल इसहाक था। जब मूसा ने इन घटनाओं को अपने मूल इस्राएली श्रोताओं को बताया, तो उसने उनके दिनों में इश्माएलियों के साथ उनके संबंधों के स्वरूप को समझने में उनकी मदद की थी। जब इस्राएल और इश्माएलियों के बीच तनाव पैदा हुआ, तो इस्राएलियों को याद रखना था कि परमेश्वर ने उनके बीच अलगाव को ठहराया था। हालांकि परमेश्वर ने इश्माएलियों को कई तरीकों से आशीष दी थी, परन्तु इस्राएली लोग अब्राहम के असली उत्तराधिकारी थे।

दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के बाद वाले संपर्कों का चौथा प्रकरण 21:22-34 में अबीमेलेक के साथ अब्राहम की संधि वाली कहानी है। यह कहानी बताती है कि किस तरह से अब्राहम के प्रति परमेश्वर की कृपादृष्टि को अबीमेलेक ने स्वीकार किया था, और कैसे अबीमेलेक और उसके वंशजों के साथ शांति से रहने के लिए अब्राहम राज़ी हुआ था। यह बताता है कि अब्राहम की भेड़ों के लिए पानी के अधिकारों पर कैसे विवाद पैदा हुआ, और कैसे अबीमेलेक और अब्राहम बेर्शेबा में आपसी सम्मान और आदर की प्रतिज्ञा करते हुए औपचारिक संधि में शामिल हुए।

अबीमेलेक और उसके सेनापति ने मूसा और इस्राएलियों को उनके दिनों में पलिश्ती लोगों के शक्तिशाली खतरे को याद दिलाया था। यहाँ पर, मूसा ने अपने अनुयायियों को सिखाया कि यदि पलिश्ती लोग इस्राएल पर परमेश्वर की आशीष को स्वीकार करेंगे, तो इस्राएल को अब्राहम के नमूने का पालन करना चाहिए और उनके साथ शांति से रहना चाहिए। वह कुआँ जो बेर्शेबा कहलाता था मूसा के दिनों में भी था, जो इस्राएल को वहाँ पर बनाई गई संधि को याद दिलाती थी, और कि कैसे उन्हें पलिश्तियों के साथ शांति और आपसी आदर को बनाये रखना है।

इस तरह, हम देखते हैं कि अब्राहम के बाद वाले संपर्कों की कहानियों में कई सारे चरित्र शामिल थे, जो उन लोगों से मेल खाते थे जिनका मूसा और इस्राएलियों ने सामना किया था। अब्राहम के कार्यों को देखने के द्वारा इस्राएली लोग अपने दिनों के लिए कई सबक सीख सकते थे।

वंश और मृत्यु

अब हम अब्राहम के जीवन पर मूसा के लेख के अंतिम चरण पर आते हैं, उत्पत्ति 22:1-25:18 में उसका वंश एवं उसकी मृत्यु। ये प्रकरण अब्राहम की विरासत पर ध्यान-केंद्रित करते हैं, जिसने भविष्य की पीढियों के लिए परमेश्वर के साथ उसके वाचा वाले संबंध को आगे बढ़ाया। सामान्य शब्दों में, इस्राएली लोग जिन्होंने पहली बार मूसा से इन कहानियों को प्राप्त किया था, उन्हें अब्राहम के वारिस होने की अपनी स्थिति के बारे में और अपनी स्वयं की संतानों की उम्मीदों के बारे में बहुत कुछ सीख लिया होगा।

अब्राहम के जीवन के इस हिस्से की पहली घटना 22:1-24 में अब्राहम की परीक्षा वाली प्रसिद्ध कहानी है। इस परीक्षा को यह निर्धारित करने के लिए डिजाइन किया गया था कि क्या अब्राहम

अपने बेटे इसहाक से ज्यादा परमेश्वर से प्यार करता था। अपने बेटे को बलि करने के लिए अब्राहम को बुलाने के द्वारा, परमेश्वर ने इस कठिन परीक्षा की शुरुआत की। अब्राहम ने आज्ञा का पालन किया, और परमेश्वर ने अब्राहम को आश्वासन दिया कि उसके अनुपालन के फलस्वरूप इसहाक के लिए एक बहुत ही उज्ज्वल भविष्य होगा।

यद्यपि मूसा के पीछे चलने वाले इस्राएलियों के लिए इस कहानी के अनगिनत निहितार्थ थे, इस अनुच्छेद की सबसे प्रमुख विशेषता थी कि यह उन्हें याद दिलाता था कि परमेश्वर इस्राएल राष्ट्र की अपने प्रति वफादारी की गहनता को देखना के लिए को उनकी परीक्षा ले रहा था। मूसा के दिनों में इस्राएल राष्ट्र के लिए परमेश्वर ने कई परीक्षाओं की शुरुआत की थी। और अब्राहम की परीक्षा में उसके अनुपालन ने उन्हें इन परीक्षाओं के साथ स्वयं के अनुपालन की जरूरत को याद दिलाया था, चाहे भले वे कितने भी कठिन क्यों न थे। और अब्राहम की संतानों के रूप में इसहाक के शानदार भविष्य की पुष्टि ने इस्राएलियों को उस शानदार भविष्य को याद दिलाया था जो स्वयं उनका होगा यदि वे इन परीक्षाओं में सफल रहते हैं।

अब्राहम के जीवन के आखिरी चरण का दूसरा प्रकरण 23:1-20 में कुल-पिता द्वारा दफन भूमि वाली संपत्ति की खरीद है। यह कहानी बताती है कि जब अब्राहम की पत्नी सारा की मृत्यु हो गई तो उसने हेब्रोन में एक पारिवारिक दफन-स्थल को कैसे खरीदा था। कहानी जोर देती है कि कुल-पिता ने इस संपत्ति को उपहार स्वरूप स्वीकार नहीं किया था, बल्कि इसके विपरीत उसने इसे खरीदा था। संपत्ति की इस खरीदनामा ने कनान देश को अपने मातृभूमि के रूप में देखने के उसके परिवार के कानूनी अधिकार की स्थापना की।

मूसा के पीछे चलने वाले इस्राएली इस दफन स्थल की खरीद के महत्व एवं निहितार्थ को अपने स्वयं के जीवनों के लिए समझ गए थे। यह उनके बाप-दादों का दफन स्थल था। अब्राहम, इसहाक और याकूब सब यहीं दफनाए गए थे। वे समझ गए थे कि देश पर विजय से पहले भी यह उनका कानूनी अधिकार था। अब्राहम, इसहाक और याकूब ने हेब्रोन में और उसके आसपास अपना अधिकांश जीवन व्यतीत किया था। इस्राएली लोग अपने पैतृक मातृभूमि के समान हेब्रोन के लिए इतने प्रतिबद्ध थे कि कुल-पिता याकूब की हड्डियों को भी दफनाने के लिए वे वापस हेब्रोन ले गए थे। अब्राहम द्वारा खरीदे गए दफन स्थल के बारे में यह कहानी दर्शाती है कि कनानियों के देश के अलावा उसके वंशजों के लिए और कोई उचित स्थान नहीं था।

अब्राहम की संतान और मृत्यु के तीसरे प्रकरण में अब्राहम की बहु, रिबका के बारे में एक भावुक कहानी है, जो 24:1-67 में उसके विशेष बेटे इसहाक की पत्नी बनती है। इस कहानी में, यह सुनिश्चित करने के लिए कि इसहाक कनानी भ्रष्टता बच जायेगा, अब्राहम ने जोर दिया कि इसहाक कनानी स्त्री से शादी नहीं करेगा। लेकिन इसहाक के लिए पत्नी लाने के लिए अपने दास को भेजकर, अब्राहम ने यह भी सुनिश्चित किया कि इसहाक कनान देश, प्रतिज्ञा किए हुए देश में ही बना रहेगा। इसहाक के लिए इस तरह पत्नी ढूंढने के द्वारा, अब्राहम ने इसहाक और उसके वंशजों के लिए परमेश्वर से आशीषों का महान भविष्य सुनिश्चित किया।

मूसा के पीछे चलने वाले इस्राएलियों ने इस कहानी से सीख लिया होगा कि इसहाक, जो अब्राहम के साथ उनके पैतृक संबंध को बनाता था, कनान में अपनी मातृभूमि को बनाए रखने के बावजूद कनानी भ्रष्टता से शुद्ध रहा था। आशीषों वाला इसहाक का उज्जवल भविष्य उनका भी भविष्य होगा, जब तक वे भी प्रतिज्ञा किए हुए देश में रह रहे कनानियों की भ्रष्टता को दूर रखते हैं।

अब्राहम के जीवन का अंतिम प्रकरण 25:1-18 में कुल-पिता की मृत्यु और वारिस की कहानी है। कई संक्षिप्त घटनाओं का यह संग्रह सारा के अलावा दूसरी पत्नियों से अब्राहम के पुत्रों को सूचीबद्ध

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

करता है। फिर वह कुल-पिता की मौत को बताता है, जिसके दौरान अपने कानूनी उत्तराधिकारी के रूप में इसहाक अब्राहम से अंतिम आशीर्वाद प्राप्त करता है। आखिरकार, यह एक विरोधाभास अनुच्छेद के साथ बंद होता है, जो संक्षेप में इश्माएल के वंशजों को सूचीबद्ध करता है।

अब्राहम के जीवन के इस समापन में मूल श्रोताओं के लिए कई निहितार्थ थे। इसने अब्राहम के दूसरे बेटों को इस्राएलियों से अलग करने के लिए सूचीबद्ध किया। इसने मूसा के पीछे चलने वाले इस्राएलियों को आश्वस्त करने के लिए कि वे अब्राहम की आशीषों के सच्चे वारिस थे, इसहाक पर अब्राहम के अंतिम आशीर्वाद पर प्रकाश डाला था। और इसने इश्माएल के वंशजो का उल्लेख किसी भी दावे को खत्म करने के लिए किया जो वे अब्राहम की विरासत में कर सकते थे। अब्राहम के जीवन की कहानी को इस तरह समाप्त करने के द्वारा, मूसा ने अब्राहम के असली वंशजों यानी इस्राएलियों की जिन्हें वह प्रतिज्ञा किए हुए देश की ले जा रहा था, पहचान, अधिकार और जिम्मेदारियों को स्थापित किया।

इस तरह हमने देखा कि मूसा ने अब्राहम के जीवन के बारे में अपनी कहानियों को लिखा था ताकि वह इस्राएलियों को सिखा सकें कि क्यों और कैसे उन्हें मिस्र देश को पीछे छोड़ना है और प्रतिज्ञा किए हुए देश की विजय की ओर आगे बढ़ना है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए, मूसा ने कुल-पिता के जीवन के प्रत्येक प्रकरण में विभिन्न तरीकों से जोर दिया कि वे कैसे कुल-पिता को दिए गए अनुग्रह के वारिस थे, कुल-पिता के समान परमेश्वर के प्रति वफादार बनने के लिए वे किस तरह से जिम्मेदार थे, किस तरह से वे आशीषों को प्राप्त करेंगे जैसे कि अब्राहम ने प्राप्त की थी, और किस तरह से एक दिन वे संसार के सभी देशों को आशीषित करेंगे। अब्राहम के जीवन के बारे में मूसा की कहानी में उन इस्राएलियों के लिए अनगिनत निहितार्थ थे, जो प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर उसके पीछे चल रहे थे।

निष्कर्ष

इस पाठ में हमने उत्पत्ति की पुस्तक में अब्राहम के जीवन के वास्तविक अर्थ को देखा है। और इस वास्तविक अर्थ को खोजने के लिए हमने दो प्रमुख दिशाओं की ओर देखा है: एक तरफ हमने उन संबंधों की जाँच की है जिन्हें मूसा ने इन कहानियों और इस्राएलियों के अनुभवों के बीच स्थापित किया था जिनके लिए वह इसे लिख रहा था। और दूसरी तरफ, हमने देखा कि अपने मूल श्रोताओं को प्रभावित करने के लिए जब वे मिस्र देश को पीछे छोड़ते हैं और कनान पर विजय के लिए आगे बढ़ रहे हैं, किस तरह से मूसा ने अपनी कहानियों को बनाया।

जब हम उन संबंधों के बारे में जिन्हें मूसा ने अब्राहम और अपने मूल इस्राएली पाठकों के बीच बनाया था, और अपने श्रोताओं के ऊपर उस प्रभाव के बारे में और सीखते हैं जिसकी अपेक्षा उसने अपनी कहानी से की थी, तो हम पाएंगे कि किस रीति से अब्राहम के जीवन का प्रत्येक प्रकरण इस्राएलियों के मार्गदर्शन करने के इरादे से बनाया गया था। और हम यह भी बेहतर रीति से समझने में सक्षम होंगे कि आज हमारे जीवनों पर ये कहानियाँ कैसे लागू होती हैं।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

Dr. Richard L. Pratt, Jr. (Host) is Co-Founder and President of Third Millennium Ministries. He served as Professor of Old Testament at Reformed Theological Seminary for more than 20 years and was chair of the Old Testament department. An ordained minister, Dr. Pratt travels extensively to evangelize and teach. He studied at Westminster Theological Seminary, received his M.Div. from Union Theological Seminary, and earned his Th.D. in Old Testament Studies from Harvard University. Dr. Pratt is the general editor of the NIV Spirit of the Reformation Study Bible and a translator for the New Living Translation. He has also authored numerous articles and books, including *Pray with Your Eyes Open*, *Every Thought Captive*, *Designed for Dignity*, *He Gave Us Stories*, *Commentary on 1 & 2 Chronicles* and *Commentary on 1 & 2 Corinthians*.